

[illegible]

यदस्य २

सत्यसत्त्वस्य २

१२८।१२८८३।१२८९१२८॥क्रमानुवृत्ति।२।२१।१२८॥ॐतिथिनमूलं॥ॐतिथिविक्रमसूचकं॥॥अथामसवर्णनं॥त
परागजातीकनगसूचकं॥अन्यान्यहाराहिरुनीहनालो।नाथ्या४समस्तद्विधानमैव।मिथाहनाया मयवलि
नाथ्या।यदाहनालोसूचियंयुज्ये॥२८॥अथधनक४॥वृषयययवलवसिराणा।थागार्थमैतान्वदुल्लहाना
।विमलिरागयवउदगाणि४समस्तद्विधानमैवविथाजनार्थ॥३०॥न्यास४॥३।१।१।जाता४अन्यान्यहाराहिरुतसमस्तद्विधान
३९।३।९।थागजाता४१३॥न्यास४॥१।१।सफायवलिहनाया।२।२॥सूचिलोहनालोसमस्तद्विधान॥३०।१२८।१२८
१२।१२।१२॥ॐतिरागजा १२ नि४॥॥३३।१३।अथपरागजातीकनगसूचकं॥लवालवद्यायहनाहव
द्या।रागयरागयसवर्णनं॥अथधनक४॥दंमाधनिलवद्यमस्यसमस्तद्विधानमैवयययवलिहनाया।२।२॥सूचिलोहनालोसमस्तद्विधान॥३०।१२८।१२८

अनुवक्तारि ३

नलवानहान्नाननराष्ट्र ४५ कटाखानागि ४॥ १॥ ७॥ २॥ ७॥ १॥ ७॥ ८॥ दृष्ट्य ४३ जूयं वृषीनागि विक्कल्याहानान् ७॥ ८॥
 दयास्यरागायवाहविधिनारागानयास्यवा २॥ ४॥ २॥ ४॥ ३॥ ४॥ १०॥ जार्ज ॥ १॥ अननदृष्ट ४३ वृष्ट्यु ७॥ ८॥ १०॥
 द्रव्यमानं १३० वृद्धविलासमृद्धगवासिद्धागि ॥ अथविशेषजाह्यदाह ७॥ ४॥ १॥ यथागालिकलाहदवमंग
 शुभगिगिलिधुतथा विह्वेषमिष्टगामृगादिककटर्जालायमानायन ४॥ कानककमकिमालगायविमलयाथ ८
 ककालयिथा दूगादूगवृत्तसुतायमनिखरुं गालिसंख्याविद ॥ ३१ ॥ न्यास ४॥ १॥ १॥ २॥ दृष्ट्यागमलिकलमानं १२
 ॥ संक्रमणकवगसूतृहर्ष ॥ थागानिबलानमृतादितस्मिन्नागीसृतीसं १॥ ३॥ १॥ कमगाखमंगन ॥ दयाहव
 ०॥ यथायगि ४॥ गरीसेकी विथाग ४॥ यवविगति ४॥ नोवागीवदमवत्स वसिसेकमगंयदि ॥ ३२ ॥ न्यास ४॥ थाग ४॥ १०॥

विथाग ४२ अलवोवागी ४३ ॥ ३८ ॥ ॥ कवगसूतृ ॥ वमनिब्रानि विथागरुक् थागमंग ४॥ थाकवदववागी ॥ दयाहव
 ०॥ वाथार्यथा विथागालि गल्लयाथवृष्टगनी विवर्तवृहिनोवागी गालिगलितकाविद ॥ ३३ ॥ न्यास ४॥ वाथन
 वृष्टकल्यन ३०० जानोवागी २१ ॥ २२ ॥ वृत्तिविषमकर्म ॥ ॥ अथकिचिद्वर्गकर्मथायन ॥ न्याय्यद्विथ ॥ वृष्टकल्यन
 वृष्टगालिगायकादलिगविराजितेन एक ४॥ स्यादस्यकनि दलितसेकायवावागि ४॥ ३४ ॥ वृष्टद्विगु ७॥ वृष्टद्विगु ४॥ सृष्टि
 यथमा २५ वायवावृष्ट ४॥ कनियुतिविगुगा यकवलोस्यगयिथावा ४॥ ३५ ॥ दयाहवर्ण ॥ वाथार्यथा ४॥ कनिविथाग
 यूनानियक मूलयथववदनीमममिययय ॥ क्लियनिवाजगलिनवटवाविमृष्ट ४॥ आहकगुटगलिर्मयविशवयन ४॥
 ३३ ॥ अथप्रथमानयनकल्यमिष्ट १॥ १॥ अथकनि ४॥ ३॥ अथवृष्ट २॥ वाका १॥ दलिगा १॥ वृष्टराजिताजागा ४॥ यथमावागि ४॥

[illegible]

वधार्थं नमः ॥ ३८ ॥ ॥ मूलगुणककनकासुखं वरुद्वयं ॥ गुणघ्नमूलानयनस्य बा (ग) दृष्टस्य युक्तस्य गुणाद्विज्ञानं मू
लेन ॥ धनयुक्तं विहीनं वज्रजिह्वयस्य वरीषु बाणि ॥ ३९ ॥ यदालवै (थ्य) नयनस्य बाणि प्रकनरा (ग) नैरुका ॥ दृष्टं गथा
मूलगुणविनाश्यां साध्या सुगंध्या कवदवबाणि ॥ ४० ॥ दयाद्वयं ॥ वालमवालकलमूलयलानिसयं गोत्रविलासरु
प्रमद्वयगाणि ॥ यथैकं कलिकलकलकलस्युर्मं (ग) धिजलवदमवालकलप्रमाणं ॥ ४१ ॥ न्यासः ॥ मूलगुणक
४ ॥ १ ॥ गुणघ्नं ॥ १ ॥ मूलकथा ॥ ३९ ॥ युक्तस्य दृष्टस्य ॥ ४१ ॥ नयनमूलं ॥ १ ॥ गुणघ्नं ॥ १ ॥ युक्तं ॥ १० ॥ वज्रजिह्वयस्य वरीषु बाणि ॥ १० ॥
॥ १ ॥ गुणघ्नं ॥ १ ॥ लयनद्वयं ॥ १० ॥ नावद्वयद्वयं ॥ १० ॥ गं ॥ स्वयं ॥ १० ॥ धनवलि ॥ १० ॥ युक्तं ॥ १० ॥ ४१ ॥ दृष्टं गथा ॥ १० ॥
दादगर्कविद्वन् क४ सबाणि निर्गद्यतां ॥ ४२ ॥ न्यासः ॥ मूलगुणक ४ ॥ दृष्टं १२३० ॥ दृष्टं १२३० ॥ दृष्टं १२३० ॥ दृष्टं १२३० ॥ दृष्टं १२३० ॥

०॥ जातं हं सकलस्य मूलदण्डं किं भयागममानसं थाहा यं सुलयमिनावनमंगादं दृष्टिगकं हि सुकटातं रवालं वा.
 लमृणा लंगालिनिजलकलि क्रिया लालसं दृष्टं हं सयुगपयं च सकलस्युथस्यं सीखा विद्य ॥ ३३ ॥ युगे १० राग १०
 दृष्टं ४ यदा लव (प्रा) नयुगं ००० यथैकमरागा नन ॥ १॥ मूलयुगे दृष्टं चरुकी जाते मूलयुगे कि ४ ॥ ६० ॥ ६ ॥ १८ ॥ आ
 र्यामुलाघ्रमूलानयुगस्य एादिना जातं हं सकल मानं १९९ ॥ उदाहरणं नय ॥ यार्थ ४ क ॥ १॥ १॥ १०
 वधायमात्रगणं कुदा न (प्रा) सीदधं तस्यार्धेन निवार्य तच्च युगं मूलं यदुहं हयानं गत्यं धरि नं यं धरि मुह
 ने पिच्छं धर्मी कामकी विष्णुदास्य निव ४ गणक निभयाने नूनं ४ सीदध ॥ ३४ ॥ न्यास ४ ॥ युग १ ॥ ६ ॥ १० यदा ल
 वे (अ) नयुगं ००० एादिना जातं वागण ४ ॥ १०० ॥ उदाहरणं ॥ अलिकल दल मूलं मालता यातमं ३ ॥ निखिल नव

मरागा श्रीलिता हं गभं की निगिय विमल लखी यद्यम (ध) निरुद्धं युतिप्रणतिवर्णनं वूरिका मलि सीखा ॥ ३५ ॥ अथ कि
 लवागिनवगिाष्टकी वाग्धर्म मूलं यवा (ग) प्रणं वूयद्यं दृष्टं प्रणमं प्रणं दृष्टं याद्विती वाग्धर्म रवता निवाग्धर्म गाष्ट वा
 ग्यद्विगि सुल्य ००० ॥ न्यास ४ ॥ १ ॥ राग ६ ॥ ६ ॥ १ ॥ अग ४ यावत्तु वी वागिदली ॥ ३४ ॥ प्रग द्विगुणम मि ॥ लिमानं ॥ १२ ॥ प्रवमववा
 ग्यं मूलव (ग) न दृष्टं विरु ॥ १ ॥ यस्मिन् विवाग्धर्म ४ साध्या ४ ॥ यात्रा निवृत्ता दणरि ४ स्वमूलं वागिजिहा (ग) न स
 मविगयं (जा) गी गदा दणकी तमा ४ जातं हिया ययि दणं विगयत ॥ ३३ ॥ मू १८ राग १ ॥ ६ ॥ १२०० अथैकमरागा यूनन
 ३ ॥ मूलयुगे दृष्टं चरुका प्राव जाताना नि ४ १०६ ॥ अथ विवागिक कवेग सुगं हं ॥ १ ॥ माल मिच्छं च समान जातं अ
 ३ ॥ यन्मया ४ सु ४ रुलमं न्य जाति म (ध) न दिक्क रुतमं यदस्या दिक्क रुलं यस्म विधिर्विला मं ॥ ३० ॥ अथ दणक ४ ॥ कं कम

उदाहरणं ॥ ४

मांसदलियलद्वयं निष्कसकसलवे विरिचिदि ॥ द्यायतसयदिभं वगिचव ब्रुहिनिष्कनवकनंतकिचयत ॥ ३८ ॥
 न्यासः ॥ ३॥ १॥ २॥ लवानिकीकमपलानि १२ कर्ष २ ॥ उदाहृवर्ण ॥ एकककयूत्रपलकिमया धनुचयत निष्कच
 पुष्कय ॥ १॥ २॥ १॥ कौ। गततदादादगलि ४ सयादे ४ पले ४ किमाव ४ सखविचिन्हा ॥ ३९ ॥ न्यासः ॥ ४३ ॥ १०९ ॥ १॥ ल
 वानिका ४२० दमा ४३ यण ४८ काकिण्य ४३ वनाठका ४१ वनाठकसागा ४१ ॥ ४० ॥ उदाहृवर्ण ॥ दमदयन ॥ ३॥ सा १
 छागा ॥ गालिनीदूलवाविका ॥ लयाधत्यणसकया ॥ गकिंसयदिकथार्त ॥ ४१ ॥ नययमाणसमानजानिक
 वणार्थदमदयययणीकनस्यन्यासः ॥ ३२ ॥ २॥ १०॥ लखेखायो २ दणा ४१ अठक ४१ यस्ते २ ॥ अथवसुखेवागिकी ॥
 वृद्धद्वोरुलडासांजासहद्विप्रजायत ॥ ४२ ॥ सुखवागिकीतय ॥ अथगलिगकाविदे ४ ॥ ११ ॥ यथकृष्टोरुलडासा

जासहद्विसुयवसुखेवागिकी ॥ गयथा ॥ जावानांविचयसामोत्यनोल्यावर्षस्यहेमनि ॥ रागहावचवागीनानि ॥ वसुखे
 वागिकीरवत ॥ १२ ॥ उदाहृवर्ण ॥ यात्रातिथिखाणवसुवासा ॥ दानिगर्त ॥ विगनिवसुवाकि ॥ द्विधूर्वहानिष्कचठक
 मंका ४ यात्रातिथि ४ वद्ववहसुदोकि ॥ १३ ॥ न्यासः ॥ १० ॥ ३२ ॥ २० ॥ लवानिका ४२३ रागाय ॥ दमदयणलका २ वट ॥
 द्वितायादाहृवर्णन्यासः ॥ ४४ ॥ लवानिका ४ ॥ १॥ १॥ ॥ उदाहृवर्ण ॥ दगवर्षसुवर्ष ॥ अयाणकमवायत ॥ निष्कण
 निधिर्वर्ष ॥ तदावदकियनिर्ग ॥ १४ ॥ न्यासः ॥ १० ॥ ११ ॥ ११ ॥ लख ॥ ३॥ ॥ उदाहृवर्ण ॥ सयककनमानन ॥ वाणी
 सयस्यमायित ॥ यविमानगर्तजार्त ॥ तदायअठकनकि ॥ १५ ॥ न्यासः ॥ ११ ॥ १०० ॥ ११ ॥ १३० ॥ ॥ यथवागिकाथोकवण
 सुखेवर्ष ॥ यथसयनववागिकादिक् ॥ न्यान्ययकनयनरुलद्विधा ॥ सविधायवद्ववागिजवध ॥ स्वल्पवागिवधराजि

यथकृष्टोरुलडासांजासहद्विप्रजायत

धनं ३०० जाना निधनानि ॥ ११॥ १००॥ १२१॥ जगन्नादिधने नूनानि लारा ॥ २१॥ ३२॥ ३०॥ अथवा मिश्रधनं आदिधने नूनानि लारा
 ॥ ४॥ अस्मिन्नुक्तयुगितयुक्तयथागरुकलारा ॥ कवणसूर्य ॥ रुजान्निदादिधने विमिले दूर्यरुजत्याय विमिलिकाल ॥
 उदाहरणं ॥ यन्निर्वादिनदिनाई हता यव ॥ ४॥ संपुत्रयन्निहियुथकयुथगैवमूका ॥ वायायदायुगयदेवसखविमूका
 संकनवासत्रलवनतदावदा ॥ ८८॥ न्यास ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ लव ४४ विमिलिकालादिना ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ कवणसूर्य ॥ यन्ने ४४ स्वमी १४
 लानिरुजल्लरागे, हत्वा नदिधनरुजल्लरागे ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ रागादिमिधननहत्वा मु ॥ लानियन्यानि यथाक्रमेण
 ॥ ८८॥ अथाद्यगक ॥ साध्वीदूलमानकयमैराद्यमगमानासक ममानविद्यदियथाद्यगमिता प्रगावणिककाकिणी ॥
 ॥ आयायाययतीदूलानि गगलमूनेकरागाविर्ग किपुकिपुहुआहुजमहियत ॥ साथे न्यायाययति ॥ ८८॥ न्यास ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥
 अथमूल्यरुगगुगितयगाया रुकजात ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

३१२२
 उग्ररुकीजातर्तदूलमूजमानं तथा र्तदूलमूजरागा ॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 अथर्तदूलमूल्यकाकिणी ॥ १०॥ ववाटका ॥ १३॥ ववाटकरागा
 य ॥ १॥ मूजमूल्यकाकिणी २४ ववाटका ॥ ४४॥ ववाटकरा ॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 य ॥ २॥ लयायत वेथानन्दनचन्दनस्य वयल्लिदमाहरागेनधन ॥ ३॥ अष्टागेनतथागवा ४४ यलदलनिष्कणमधहिता
 न्, रागे प्रककषा रुगा हरकमिते दूर्यविकाषमिह ॥ ८१॥ न्यास ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 नीलदगर्कमूकारुलानि गते सद्वागिवयवत्रवनि जायिषाचिह्नधनं सगस्रहवगेनतनिजध
 नाद्वैकमर्कमिथो जानासुल्यधना ४४ युथक्वदसखतदलमूल्यानिम ॥ ८३॥ न्यास ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

नदा नन १ वत्त सखा सुदु निता सु (गया) निता नि १ ना ८ मो २८ व १ एने विष्ट बा (नी) विरु कन वत्त मो ल्या नि स्य विनि
 नानि सु यथा कथं विदिष्ट कलित रिन्नानि अथ वा यथं तथा सु धिया कल्या न यथा रिन्नाना नि तथा कलित २८ अना
 जानानि सु ल्या नि मूल्य धनानि २३३ ॥ २९ ॥ १० ॥ १ ॥ २८ ॥ अथ वा गमाणां विधेय क कु दे ८ रुक जाना न्य रिन्नानि २१० ॥ २८
 १ ॥ २९ ॥ २३० ॥ १ ॥ नमा भन दमा ८ सी रा यन ॥ ॥ अथ सु वत्तु गलित क वल क रूपे ॥ सु वत्तु वत्तु रिनि था गत्रा नी स्वत्तु १३
 अरु क कन के व वत्तु ८ वत्तु रिनि वत्तु धि न रु म रु क वत्तु रिनि गमा धि न रु म सी रा ॥ २४ ॥ उदा ह य नी ॥ विधेय क वत्तु
 दं ग वत्तु सु वत्तु माया दि (यं दं ला य न यं ग य मिता ८ क म ग आवर्ति न व द न म सु वत्तु वत्तु सु वत्तु सु वत्तु गलित क व
 नि सु वत्तु ८ ॥ २३ ॥ न गमा धन न य दि वि ग ति न क माया ८ स्य ८ आरु ग व द वत्तु मि ति सु दा का ॥ वत्तु धि न रु व ति धा

आवर्तिन

आवर्तिन रु म रु क सु वत्तु वत्तु रिनि २

वत्तु स्य विमा ना १

वत्तु सु द मा १
 उगा वत्तु रु म न वि ग ति ८ क ति न दा न रु व नि माया ८ ॥ २३ ॥ न्या स ८ ॥ १२ ॥ १२ ॥ ११ ॥ १० ॥ जाना आवर्ति न वत्तु मि ति मा
 या १२ ॥ एत ए व य दि गमा धि ता ८ स न ८ आरु ग माया ८ रु व नि ता १० ॥ ९ ॥ २ ॥ ९ ॥ वत्तु ८ १३ य दि त द वत्तु आरु
 वत्तु स्वत्तु का र्य त दार्थ व द न माया रु व नि ॥ ॥ अथ क व ग सु वत्तु ८ ॥ स्वत्तु क नि द्रा यु ति जा न वत्तु सु वत्तु
 न द वत्तु वत्तु वत्तु नाना १ अरु म वत्तु मि ज सी रा य य म र्क म र्क म वत्तु स्य रु व त्प मा ८ ॥ २१ ॥ उदा ह य नी ॥ दं ग नी वत्तु
 वत्तु न र्क माया अरु म वत्तु स्य म र्क त द वत्तु जान स र्क द ग क सु वत्तु म र्क म वत्तु स्य व द य मा ८ ॥ २८ ॥ न्या स ८ ॥
 १० ॥ ११ ॥ ० ॥ आवर्ति न वत्तु ८ १२ ल द म र्क म वत्तु मा ८ १२ ॥ ॥ क व ग सु र्क ॥ स्वत्तु क नि द्रा यु ति जा न वत्तु ८ स्वत्तु य व
 ८ ॥ २ ॥ ० ॥ वत्तु वि था जि ता सी अरु म वत्तु मि ज था ग वत्तु वि ल म रु क वि दि ता मि ज स्या ८ ॥ २२ ॥ उदा ह य नी ॥ दं ग

[illegible]

२२
८

श्री २

[illegible]

卷八

कर्तुं कविणी १८५ अस्य कृदा गद्या ८१३१२ अयत्तय ८१३१२ ०००० अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 न ८०० रु ८ किल यमा सन्नयदं ३ अयकलु ८५ वं सर्वय ॥ कयनस्य ॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 निविष्टरुका दि८५ पि नैशानयतां १११ ८०० थकसंख्युणा नुजाना कलु ८५ वं सर्वय ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 उदाहरणं ॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 ३२ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥

० २० अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 १२ १८ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 कयनस्य ॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥
 अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥ अयसि नमस्तु ३८ ॥ १॥

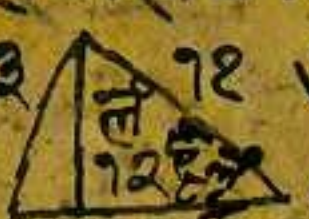
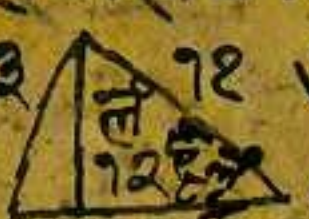
सखधनमज्जनसुखमधुजुजुकाठिकुर्नवयधदृष्ट्यनलकाठिकुर्नमिनीयाशुतांका वदैवसमानाययानायमा
 न॥ १२॥ उदाहरण॥ यद्वकोशकलितसलिलकापिदृष्टगणग कायाद्वैकमलकलिकायवितस्त्रियमाणमन्दमन्दव
 लितमनिलनारुहसुयुग्मगस्मिन्मर्गगणकगणयद्विप्रमवप्रमाण॥ २०॥ न्यास॥ काठिकुर्नवहसु॥ १॥ जुजु८२ अ
 यथाककवणलवोकाठिकुर्नकाठि॥ ११॥ वृद्धजलगाश्रयः वृद्धमवकलिकामानयताकुरु॥ १॥ द॥ ननि १८४२ २२
 अथकाद्याजुजुयद्विप्रयपिदृष्टगणमजुजु ३॥ ज्ञानार्थसूत्र॥ द्विनिघ्ननालाद्विनिर्गुणसमाश्ननवत नविराजित ३॥ २२
 या० गालाद्विनिघ्ननालसमाश्ननवद्व्या उदायमानखललखननत॥ २१॥ उदाहरण॥ वृद्धिद्विगुणताम्रयाद्वुतयुगवापकवि० का
 यंगा दूलायाधयवाधुनश्रुतिथथाशुयकिविदुमानाजानैवसमाननयार्थदिगतावैशुयमानेकिय द्विद्वैत्यसूयविप्रमसि
 गणितद्विप्रमार्थवक्रम॥ २२॥ न्यास॥ वृद्ध १०० हसु। वृद्धवाधुनकव २०० यथाककवणनलवृद्धायायमाने १०० द॥ ननि १८४२ २२



जुजुकाठियाग॥ २॥

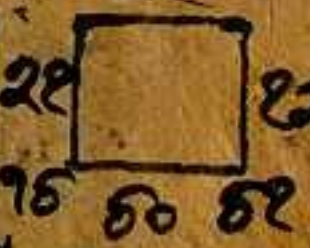
जुजुकाठियागककुर्वयुथककातकवणार्थसूत्र॥ कर्तुस्वावर्गद्विगुणाद्विगुणाख्या या० काठियाग० स्वयुगोस्वयमु
 ली। या० गाद्विधामूलविहानयुक्त० स्यातादिदृष्टजुजुकाठिमान॥ २३॥ उदाहरण॥ द॥ सकाधिका० कर्तुस्व
 धिकाविगति० सख० जुजुकाठियुनियते नगनमयुथकवद॥ २४॥ न्यास॥ कर्तु० १० जुजुकाठियुति० २३ यथाकक
 वणनजानजुजुकाठि० ११॥ द॥ ननि १८४२ २२ ॥ अन्यकवणसूत्र॥ अन्यन्यमूलाग्रगसूत्रयागा द्वावैधेयागद्वैतवव०
 वलोस्वयागनद्वगावैराष्ट्ररुथीव १२॥ लवोरुयत० कर्तु० २३॥ उदाहरण॥ यवदगदगकवाधुययाः
 द्वावैधेयागमधुमिकथा० वृत्तवतवमूलाग्रगसूत्रयुत लम्बमावद॥ २३॥ न्यास॥ वणू ११॥ १० वृत्तवतव
 मूलाग्रगसूत्रयागान्धालीव० ४६॥ वंगानकव० ४९॥ कयद॥ ननि १८४२ २२ ॥ अन्यकवणसूत्र॥ ३॥ २॥ अथवाह ४



॥ उदारवर्ण ॥ रुमिष्टुर्दृग्मिता मुखमैक संख्यं वा दूयथा दिवा कन संमिनी च । लंवा यि यत्र वि संख्य क प्रवर्ण
 कथं रु लं कथयत कथितं यदा श्री ॥ ३४ ॥ न्यास ॥ लं १२  १२ तद्वत् १९१ ६० दमय कथन वा सुर्व रु लं । लं वन निध्न
 क मुखे मुखं मित्या दिव क मा ण प्र का ष ण त द १३  १२ व रु लं वा सु र्व १३८ अथ वा क ण स्य र्व उ द र्य क्त्वा उ
 रथा ४ रु लं क व न द व १३८ अथ पि रु ज स्य दू र्वा द्वा द्वा न स्य न्या स ॥ १३  १२ अण न न य का ष ण त द व रु लं वा २४
 सु र्व ८९ ॥ अथ सु ल व नि दू य णा र्थ सु र्व ॥ च रु रु ज स्य नि य तो हि क  १२ लो क र्थ न नां सि नि य र्त् रु लं स्या न
 । य सा धि तो ग व णो य द्वा श्री ४ स्व क ल्पि तो ग वि न त्र ण न सु ॥ ३३ ॥ न ष व वा रु र्थ य त्र य क णु व न क धा क्ते
 रु लं त त ॥ च रु रु ज हि य का न न का णो अ क म्या न ४ य ध य मा नो स्व क णु कं श का य य त ॥ ६० ॥ त्र य व ह न य स र्व

तो स्व कं क णु व र्द य त ॥ अण न वा कं न ष व वा रु र्थ य त्र य क णु वि नि ॥ लं व था ४ क णु या र्थ क मं नि दि न्या य त्र य क र्थ
 य रु र्थ नि य त र्वा यि नि य र्त् रु लं ॥ ३३ ॥ स य रु क ४ यि ना वा वा व का वा नि त र्वा त ॥ या न वा हि च रु र्वा हि क र्थ
 र्थ नि य त र्वा हि नि ॥ ३० ॥ क व ण सु र्व सा र्ध लो को ॥ ६० ॥ अणु नि मु ल्य च रु रु ज स्य क ल्प थ त द र्ज वि व क्ति ता या च रु रु ण
 वा रु क नि रु दी य सु लं दि ना य प्र व ण प्र मा ण ॥ ३८ ॥ अणु ल्य क णु हि रु नि दि रु का सु र्द रु लं उ ल्य च रु रु ज स्या त ॥ स म
 प्र तो उ ल्य च रु रु ज च त था य न न रु ज का ठि या न ॥ ३२ ॥ च रु रु ज न्य प्र स मा न लं व लं व न नि ध्न क म् मुखे क र्वा ॥ ४० ॥
 अणु द ण क ॥ क ण स्य र्थ व रु नि रु ल्य च रु रु ज स्य क णु त त प्र ग लि तं ग ल क य च रु उ ल्य प्र त प्र व ल न स्य त था य न स्य
 य दि ह नां न स मि नां मि नं च द र्श ॥ ४१ ॥ अथ म क ण स्य न्या स ॥  २१ २२ २३ अण न क ल्प थ गि य द मि ति जा ता क

श्रीगदानयनं ॥ कर्तुं प्रितुजघानेकमूरयथा न्यायराजिर्गुणयतया ॥ गनदुजयतिरुजवधया ॥ कर्तुं यद्विः
 मम ॥ ३३ ॥ अस्य कर्तुं नयनस्य वृद्धक्रियाद्वयगलियु क्रियादग्नितुको भगाह ॥ अरुहजायद्वयवाहकाटय ॥ यम
 स्यर्ककर्तुं हता ॥ ति ॥ यदुर्दुर्जयद्विषमैयकलितं ॥ प्रुताउगय पितुजद्वयारुग ॥ ३१ ॥ वाहार्ध ॥ काटिवधनयुक्ता
 यकाप्रुति ॥ काटिजुजावधेर्क ॥ अन्यालयो सत्ययि साधनस्मिन् ॥ पूर्व ॥ कर्तुं यद्वद्वगनविद्य ॥ ३८ ॥ जायद्वय  २८
 १३ ॥ गनवगवकर्तुं हितुजकाटय ॥ गामामरुगी हर्लधुमे र्वयकल्या कयस्य दग्नि ॥  ३८
 १२ ॥ श्रीमहताया सनानाती ॥ ३२ ॥ १८ गस्येव जायद्वयस्य गनवगवकर्तुं काट्याद्यनि ॥ ३६ ॥  ३८
 भककर्तुं ॥ १८ वाहार्ध ॥ काट्याद्यनि ॥ १८ ॥ ३८ अनयावेकमयव ॥ प्रवण ॥ ३३ प्रवसुधन ॥ ३८ ॥ ३३ कायन ॥ अथय

दियं प्रुजमूरयथा वृहयं कलान्यसं कर्तुं गदाजायद्वयकर्तुं ॥ ३१ ॥ वावध ॥ ३८ ॥ दिताय ॥ प्रवण ॥ ३८ ॥ स्यात् ॥ दग्नि ॥  ३२
 ३२ ॥ उदाहवर्ण ॥ कर्तुं यजगनयं कितिमिति सुखेन्दुर्लुर्लुमूर्ख ॥ वाहार्ध ॥ कलितिरि ॥ गवातिधुतिरि सुल्लो ॥  ३२
 ३२ ॥ यतयप्रुता ॥ एकाखाययमे ॥ समातिथि ॥ लेनयाथतल्लवकी ॥ सुल्लो ॥ गाधुतिरि सुथा ॥ जिनयमेथगि ॥ द्रुवा
 ३२ ॥ ३० ॥ ३३ लवथा ॥ ३२ ॥ गत्व ॥ कथयाधवप्रवणयाथागा ॥ दलवावधा ॥ सुल्लो ॥ निजमानद्वद्वुजथाथा ॥ गनयास्या
 रुग ॥ सावार्धवदलवकी ॥ यजुजथा ॥ सूत्रा ॥ यमा ॥ गवक ॥ सर्वगा ॥ गितिक ॥ यवद्व ॥ निगर्वा ॥ कयवद्व ॥ सिधत् ॥ ३० ॥ न्यास
 ॥ १२२ ॥  २२९ ॥ अणुमान ॥ ३०० ॥ मूर्ख ॥ १२२ ॥ वाह ॥ २८० ॥ १२२ ॥ कर्तुं ॥ २८० ॥ ३१ ॥ लवो ॥ १८२ ॥ ॥ अणुकर्तुं ॥ सूत्र ॥ लव
 १२२ ॥ गदाप्रितवाहार्ध ॥ मर्ध ॥ संध्या ॥ स्वामस्य लवस्य ॥ संधूना ॥ रु ॥ यी ॥ साध ॥ धैय ॥ स्याध ॥ र्वर्क ॥ ३१ ॥ तत्सं धिः
 क २८० ॥ ल ३०० ॥ क ३१२

द्विष्टयवर्तव्यप्रवणान्नान्यथा॥०॥न॥रुकांलवप्रवर्थागात्स्यागामध॥४२॥लव॥१८८॥नयाप्रितवाद्गु॥१८८॥
 प्रकाटिप्रुनिकृतायननवात्यर्दवाद्गुवितिअनथा॥मध्यामिनावाधा॥५८॥सासीधिसीक्षा॥गदूनरुविनिदितायावाधा॥२१२॥सायी
 ०सीक्षा॥एवद्विनाथालव॥२२३॥नयाप्रितवाद्गु॥४२६०॥अनथा॥मध्यामिनावाधासीधिसीक्षा॥१३२॥पी॥०॥१८८॥आयलवस्यास्या॥१८८॥
 धनवर्तव्यसाध्यासीधिसीक्षा॥४३८॥यवर्तवनानन॥२२३॥प्रवणान्न॥२८०॥युथनुनिग॥यवपी॥०॥नानन॥१८८॥रुका॥लव॥२८॥
 लवध॥४२६०॥क॥ध॥४२६०॥एव॥द्विनाथालवस्यासीधिसीक्षा॥१३२॥यवर्तवन॥१८८॥क॥ध॥न॥२१२॥युथनुनिग॥४३॥
 यपी॥०॥न॥२१२॥रुका॥लव॥लवध॥४२६०॥क॥ध॥४२६०॥॥अथक॥ध॥या॥था॥गा॥य॥धालव॥नानार्थ॥सूर्य॥लवो॥रु
 धोनिजनिजया॥०॥रुको॥वर्तव्यो॥स॥४॥आस्या॥या॥व॥द्व॥या॥या॥ग॥लव॥व॥व॥॥५३॥एवम॥ग॥लवो॥वर्तव्यो॥२२३॥१००॥आस्याम
 ४॥१३३३०

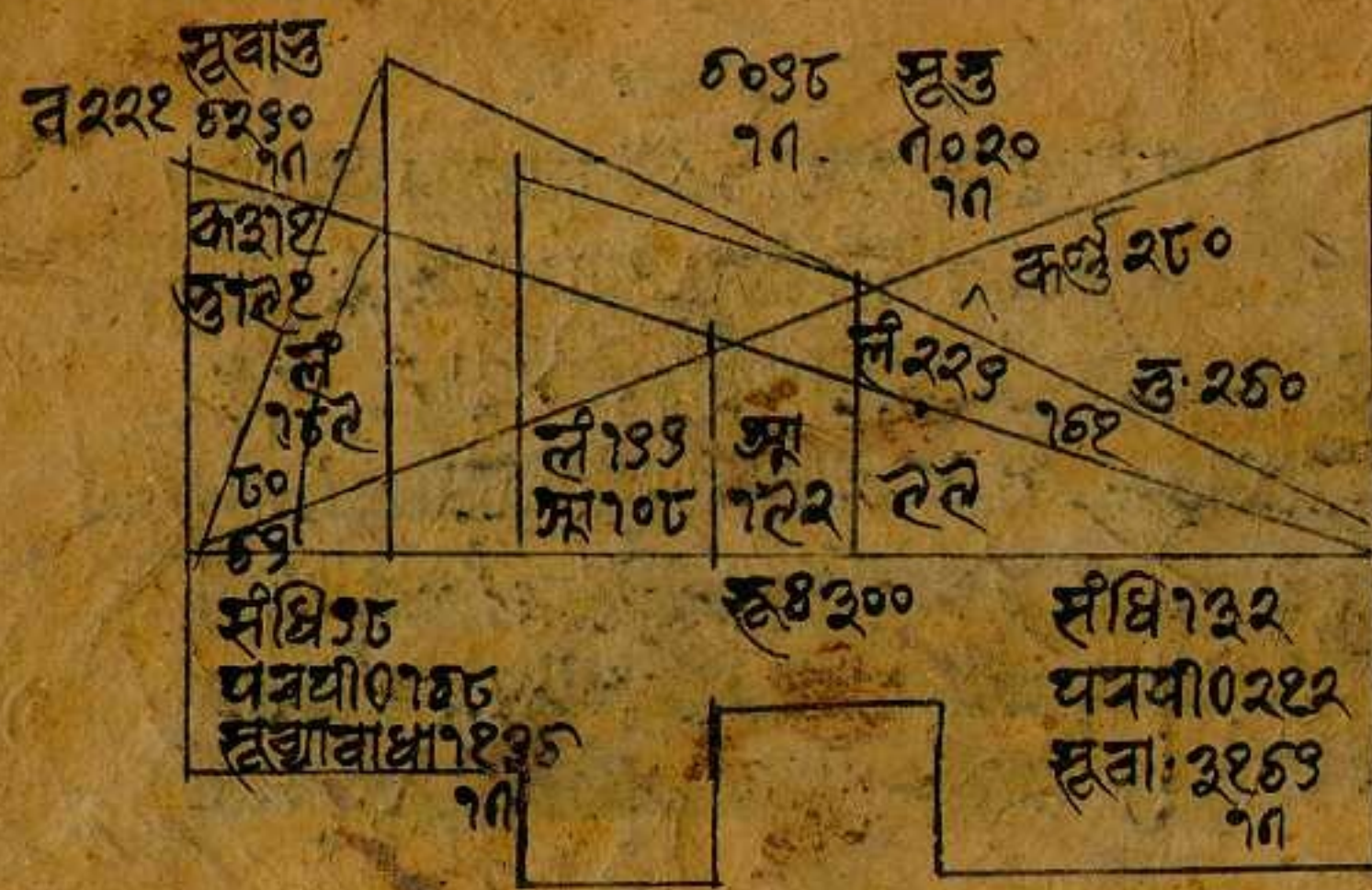
१वा॥४२२॥४००॥व॥२००००॥या॥४२॥द॥१॥४२॥

म्नामूलोयगसूयथागादियादिकन॥लव॥४८॥क॥ध॥४८॥या॥था॥गा॥य॥धालव॥४१३३॥क॥ध॥४८॥१०८॥१८२॥अथसूविलिवा
 वाधाकुजाज्ञानार्थ॥सूर्य॥लव॥द॥न॥निज॥स॥धिसीधिसीक्षा॥यवर्तवन॥४८॥समा॥क॥था॥क॥य॥४॥समय॥न॥स॥ध्या॥वे॥रु॥हा॥न॥स॥ना॥दु॥तो॥नो॥व
 ॥५४॥समय॥न॥स॥धिरु॥धो॥सू॥या॥वा॥ध॥यु॥ध॥क॥या॥गा॥॥हा॥न॥द॥न॥४॥यवर्तवन॥४८॥सू॥वी॥ल॥वा॥रु॥व॥रु॥ध॥४॥५३॥सू॥वी॥ल॥व॥ध॥रु॥धो॥निज
 निज॥ल॥वा॥दु॥तो॥रु॥धो॥सू॥या॥४॥एव॥क॥य॥का॥य॥४॥यो॥रु॥सू॥वा॥गि॥का॥द्वि॥य॥न॥॥५३॥अथ॥कि॥ला॥य॥ली॥व॥४॥२२३॥अस्यासीधिसीक्षा॥१३२॥अथ
 यवर्तवन॥१८८॥गु॥नि॥ग॥अ॥न॥न॥२२३॥रु॥का॥४॥समा॥खा॥जा॥ग॥४॥८८॥अस्यायवर्तव्य॥५८॥था॥गा॥हा॥वा॥रु॥४॥१२१॥अमन
 रुमि॥३००॥सु॥लो॥समय॥न॥स॥धिरु॥को॥जा॥ग॥सू॥या॥वा॥ध॥॥१२३८॥८॥३१८३॥यवर्तवन॥१८८॥रु॥मि॥गु॥वा॥रु॥८॥रु॥को॥
 मूलव॥१००॥रु॥को॥१८८॥२८०॥जा॥ग॥४॥सू॥वी॥ल॥व॥४॥८०३८॥११॥सू॥वा॥११॥रु॥व॥रु॥को॥१८८॥२८०॥गु॥नि॥गो॥सू॥वर्तव्य॥या॥मा

सु॥
 १०२०
 ११

सू॥वा॥
 ४२३०
 ११

४०३८
 ११



क ३ क ३
 ली १८२ २२९ यथा कर्मरुको ज्ञानो समाने वृद्धो सुवा ६२९० १०२०
 तथा कृपयदगर्नि। एवमय सर्वगुणगहा वराणि धिमाणि सुव्य
 गुणकीरुयथायाग्यं रुलं कृदयकल्या सुधिया लेवाणि सुली ॥ कवणसूर्य ॥
 वासहनन्या निरुत विरुक् स्ववाण सुथो ८ य विधि सु सु ८ वा वि गति २२ ३०
 ध्व वि दनं थ (ले ८१) सु ली थ वा स्या द्य वहा नथा ग्य ८॥ ३१ ॥ उदा रु न ॥ वि
 र्क रु माने किल सफ यणं तण्य मा गय वि धि ८ य व क १ वा वि गति यत्त नि
 धिय मा गं त द्या स र्म स्वा वि स ख वि वि न्य ॥ ६२ ॥ न्या स ८॥ (वास ८१) ल वं य
 वि धिय मा गं ॥ २१ ॥ सु ग हा व वि ध य य ल वं द्या स माने ११ ॥ सु ली वा २२
 १२३२ १२२० ११ ३२२१

ल वं सु ग हा व वि ध य य ल वा स माने १॥ क व ण सूर्य ॥ वृ ष ऋ ऋ य वि धि सु गि त द्या स या द ८ रु लं त ग, कृ णु वं द्ये नू य
 वि य वि न ८ क म् क स्य व जाल, (गाल सु वं न य पि च रु लं य ष र्ज वा स नि धी, अ रि रु कं रु व नि ति य र्म (गाल ग र्ध य ता
 र्थ ॥ ३२ ॥ उदा रु न ॥ य द्या स सु व ले मि त ८ किल स म क् य रु लं त ग कि, द्या स ८ स फ मि त सु य स्य स म न (गाल स्य
 न स्या पि कि, य ष र्क दू क ठाल स नि रु रु लं त स्ये व (गाल स्य कि, म धा वृ हि य नी रु लं य वि म ल वि धि सि ली ला व नी ॥
 १०॥ न्या स ८॥ (वास ८१) ल वं क ण रु लं ३८ ॥ गाल य ष रु लं १२३ ॥ गाल स्या न र्ध न रु लं ११२ ॥ क व ण सूर्य ॥
 द्या स स्य व (र्न रु न वा मि ३२ २१ नि धि, २३२३ ॥ सु र्क रु लं य व ११११ ॥ स रु स १००० रु क १० ॥ १३८१ ॥ द्या ११ रु न ग क
 १९ रु न थ वा स्या, सु लं रु लं स वा व हा १००० ॥ नथा ग्य ॥ ११॥ १२२० ॥ य नी रु न वा स द लं २२०० ॥ नि ऊ क वि गी

धि४प्रथमाक्षय४स्या, त्यंवाहन४यविधिवर्गवृथरुग४आशानितनखलननरुअञ्चुर्ध्व, व्यासाहर्गप्रथ
 समाकमिहृक्कास्यात॥१८॥उदाहरणं॥अष्टादशांशेनवृत्त४समान, भकादिनिश्चयनवयवार्थ, प्रथकप्रथ
 क्ताववदाशुजावा, खोक्केमिगवासदलंवयय॥१९॥न्यास४॥व्यास४२९०अथकिलयविधि४११९अष्टाष्टाद
 शांशेनवृत्त४भकादिमुनिननरुत्याधनूमिकलितनशासाध्या४॥
 अष्टादशांशेनयविधिधनूमिवायवर्जजावा४साध्यान्, तथापि
 नन्यास४यविधि४१८वायानिच॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥तथादगर्गं॥
 ८२॥१२०॥१२९॥१८९॥२०८॥२२८॥२३८॥२९०॥तथादगर्गं॥

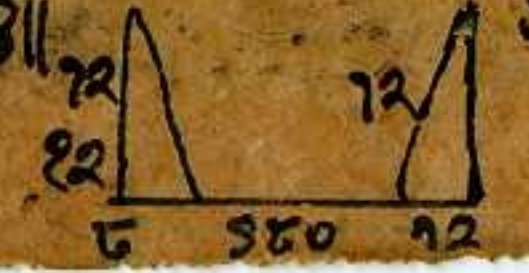


अथवायसूत्रार्थविधि ३२
 गाप्रवशवन्निप्रयवर्ति
 ककनणेनलघानि३२।
 एवमस्यस्मिन्नस्मिन्नविद्या

श॥कवणसूर्य॥व्यासाविद्यातयूतमोर्विकयाविरुक्ता, जीवांश्चिपंचमुनिन४यविधिधुवर्ग४आशानितात्यविधि
 वर्गवृथरुगा, याथयथरुगिदलात्यनिधनू४स्यात॥१९॥उदाहरणं॥विहिगाबूहयमुगासुता, वदतशाः
 मधूनाधनूमिग४यदिनस्मिधनूमृगक्रिया, गलितमालिनिकातिनेयूर्ण॥२०॥आ३२॥८२॥१२०॥१२९॥१८९॥२०८॥
 २२८॥२३८॥२९०॥सप्रवायवर्तिन४यविधि४१८अष्टाजानानिधनूमि॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥
 दशांशेनमुनिनानिस्यू४॥बूनिग्रीमहागणकरासुवावायविचिनायगलितयाद्यालीलावर्त्यकिप्रवावहा
 व४समाक४॥॥अथवातयवहावकवणसूर्य॥गणयित्वाविस्मार्तवदूषूक्तनभूतयूतिरुश्रिस्तनकमित्या
 ससमितिप्रवदेष्टवधेव॥८२॥कयरुलंवधुर्गवातधनरुसुसंख्यास्यान्॥उदाहरणं॥रुजवकनयादेष्ट

रुलं तुल्य भव ६०० प्रगल्ब ७ नरु कजार्ग पृथक पृथक रुलं ३०० ॥ १२ ॥ व १२० ॥ ॥ तिथी लीला वर्यां श्री रासु बाबाय वि
 ववितायानि विवहा ४ समा ४॥ ॥ कया वो वहा प्रक वग सुय ॥ कयथा ४ कयुथा वन प्रय तथा वि सपरु कान
 साधीषव ४१ ६ ॥ शेकल ४ यदयं तु कलुनिर्व रानु प्र ७ नयूकं दल सु ४ य ॥ १ ॥ उदाह वग ॥ नन्य वले मिनिहा
 यथ वन न कयुथा यानु न विथु ल्यं यथा ४ निप्र रुव किथा यू कि मा न्वे सौ व क म य क यू क हि म न्य खिल ॥ २ ॥ अण
 कयानु न १२ कलुनिर्व १३ अनया व नानु न १२ २ रुका व साधीषव ४१ ६ लव ३ शेकी यद वयु गि नि कलुनिर्व २६
 कयानु न ७ ड नयूकं गद द कय ॥ १ ॥ ३१ ॥ अण सु ल्या था ग य द मि नि जा नो क ॥ ११ ॥ ११ ॥ ॥ क व ग सुय ॥ १ ॥ ११ ॥ ११ ॥ क य द य प न
 ल न क ग ल ग न व ४ कयारु व दि ॥ २ ॥ २ ॥ न व द य नि खो व रु क ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क य द य न व रु नि रु हा दी
 था हि नि ४ सार्ध क व न य थ न १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि

कययुलानि १२ ॥ क व ग सुय ॥ कयारु व न व द य प न ल ग न व ४ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि
 य १ ॥ क क न व रु नि रु हा कययुलानि ४ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि
 ॥ यदी य १ ॥ क क न व रु ४ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि
 ग द य प न ल ग न व ४ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि
 रु हा ४ १ ॥ क व ग सुय ॥ कयारु व न व द य प न ल ग न व ४ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि
 य न द य प नि खो व रु क ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि
 ल स्य स म न द द किला रु ल कयारु मि मू ख क व द य मि न न्य स्य द गे य न ४ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि
 यदी यानु न १ ॥ यदी य व किय द द व व रु नि कयारु मि मू ख क व द य मि न न्य स्य द गे य न ४ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ क स द क क हिल र मि ग स्य ग स्य प्र रा स्या न् किय गी व द ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ ल व नि



संस्कृत
SANSKRIT

2.113 - I

१२१२८

जाता रुदा ४२० ॥ गद्यथायस्मा य ४। १८ १२२। १२२३८। १२२८९। १२८२९। १८२२९२९२२८। १२३८२। १२८९२। १८२९२।
१८९२२। १२९२८। १९२८२। १९८२२। ८२९२। ८९२२२। ८२२९२। ८२२२९। ९२८२२॥ ॥ संख्ये क्वं व ११२२२८८। अ नि
अगा किं व लोच्य क व ११२२२८८॥ स्मृ नान्मम काय विना निम कि द्या न ४ समा कि य मि नि य रुदा ४। ड दारु व ११॥ स्मृ नम
द्व स्मि ते व के व न्या न्यं ख न व कि नि ४। क नि सं ख्या वि रुदा ४ स्य ॥ यदि व सि नि ग य ता ॥ २३॥ अ य नि मां का न व २ अ यं या
व स्मृ मे काय वि ना न्या स ४। २८। ८२९ प्र षा द्या न ४ जा न ४ सं ख्या रुदा ४। ८०९८०॥ क व ११२२२८८॥ नि व क मं के अ मि दं नि य
क स्मृ नान्मम काय वि ना वि रु क १। वृ या दि रि स्मृ नि रु ने ४ समा ४ स्य ४ सं ख्या वि रुदा नि य तं क था ॥ २१॥ न य नि ग स्मृ न
क सं ख्या या हि स्मृ न क था ॥ क थि न रु व थं १। सं कि क मू कं वृ थू ना रु थ न ना का स्मि य स्मा अ नि ग लु व स्य ॥ २८॥ ड दारु व ११॥
यं व स्मृ न स्मि ते व के यं था था ग रु था द ग १। क नि रु दा रु व सं ख्या २। दे व सि नि ग य ता ॥ २२॥ अ य किं व नि य की १२ वृ दं नि क

४१

५

३